## पद १४०

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल जलद)

हा सोहं हंसराट् म्हणे मी, मी मज पहा।।धु.।। ज्या सत्तें वायु मिरवे। भय कंपे सूर्य उगवे। इंद्राग्नि मृत्यु धावे। रौद्राभा उग्रतम अति दृग् भूता प्रकाश हा।।१।। नभशक्त्या मेघ वृष्टी वेदांती दृष्टी सृष्टि। नकळे जे होती कष्टी। ब्रह्मादि स्तंभ भासे, शिव चिन्मार्ताण्ड हा।।२।।